अथवा मिस्ट चैम्बर में रूटिंग अच्छी होती है। जड़ निकालने के पश्चात इन कलमों का खेत में प्रत्यारोपण किया जाता है।

क्षेत्र तैयारी

खेत की अच्छी तरह जुताई कर तत्पश्चात पाटा चला कर मिट्टी को भुरभुरी तथा खरपतवार मुक्त कर लेना चाहिए। तत्पश्चात 2 मी. x 2 मी. अंतराल पर 45 से.मी. x 45 से.मी. x 45 से.मी. आकार के गड्ढे खोद कर उनमें सतही मिट्टी, रेत तथा गोबर खाद का मिश्रण भरा जाता है। 2500 पौधे प्रति हे. के लिए लगते हैं।

प्रत्यारोपण

मानसून के ठीक पहले जड़ युक्त कटिंग्स को तैयार गड्ढ़ो में प्रत्यारोपित करना चाहिए।

रखरखाव

आवश्यकतानुसार समय–समय पर निदाई–गुड़ाई करना चाहिए। रोपण के बाद प्रथम 6 माह में तीन बार निंदाई की जाती है। वर्षाकाल में प्रति पौधा 50 ग्राम NPK नाइट्रोजन, फास्फोरस, पौटेशियम उर्वरक दिया जाना चाहिए। वर्षाकाल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं के बराबर होती है परन्तु शुष्क मौसम में 15 से 30 दिन के अन्तराल पर सिंचाई आवश्यक है।

रोग एवं कीट

अग्निमंथ पर किसी रोग अथवा कीट का प्रकोप नहीं पाया गया है।

अन्तवर्ती फसलें

वैसे तो अग्निमंथ को एकाँकी फसल के रूप में उगाया जाता है परन्तु इनके पौधों के बीच के स्थान (अन्तरावर्ती फसलें) पर प्याज, लहसुन की फसल भी बोयी जा सकती है।

फसल परिपक्वता

फसल परिपक्व होने में कम से कम तीन वर्ष का समय लगता है।

कटाई (विदोहन)

फसल परिपक्व होने के पश्चात् सितम्बर अक्टूबर माह में कटाई की जाती है। विदोहन में अग्निमथ के पौधों को सावधानी पूर्वक जड़ सहित खोद कर निकाला जाता है।

कटाई उपरान्त प्रबंधन (Post Harvest Management)

पौधों को उखाड़ने के पश्चात् जड़ों को काट कर तथा तने व जड़ों को छीलकर छाल को अलग किया जाता है। तत्पश्चात जड़ों व छाल को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। फिर उन्हें छाया में सुखाया जाता है। सूखे हुए जड़ों तथा छाल के टुकड़ों को अलग–अलग साफ थैलियो अथवा बोरो में भर कर शीत गृह में अथवा किसी ठंडे स्थान पर भंडारित किया जाता है।

उपज

तीन वर्ष पुराने रोपण से प्रति वृक्ष 1000 ग्राम अथवा प्रति हेक्टेयर न्यूनतम 1250 कि.ग्रा. जड़े (शुष्क भार) प्राप्त हो जाती है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

पादप कार्यिकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

अग्निमंथ

(*Premna integrifolia* Linn. Syn. *P. obtusifolia*)

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

अग्निमंथ

(*Premna integrifolia* Linn. Syn. *P. obtusifolia*)

कुल	:	लैमिऐसी (Lamiaceae)
संस्कृत नाम	:	अग्निमंथ, श्रीपर्ण, वातछिन
हिन्दी नाम	:	अगिया, अरघी, अरनी, अगेथू, गनियार
अंग्रेजी नाम	:	हेडेक ट्री (Headachetree)
आयुर्वेदिक नाम	:	अग्निमंथ
व्यापारिक नाम	:	अग्निमंथ
उपयोगी भाग	:	जड़, छाल (जड़ व तने की), पत्तियाँ, फूल, काष्ठ

अग्निमंथ एक सीधा आरोही अथवा छोटा बहु–शाखीय वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 7–10 मी. तक एवं तने का व्यास 30 सेमी तक होता है। इसके तने पर काँटे होते है। छाल भूरे, मटमैले, रंग की, दरार युक्त तथा परतदार होती है। इसके पादपांगों का उपयोग आयुर्वेद, सिद्धा तथा यूनानी चिकित्सा प्रणालियों में अनेक रोगों के उपचार तथा औषधि निर्माण में किया जाता है। आयुर्वेद में यह 'दशमूल'का एक अवयव है एवं वृहद पंचमूलों में से एक है। औषधीय गुणों की दृष्टि से इसकी जड़ (मूल) सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। इसका उपयोग दशमूल क्वाथ, दशमूलारिष्ट तथा च्यवनप्राश अवलेह बनाने में होता है।

रासायनिक घटक :

अग्निमंथ में कई प्रकार के अल्केलॉयड्स, कार्बोहाइड्रेट्स, अमीनो एसिड्स, स्टेरॉयड्स, फ्लेबोनॉयड्स, ग्लायकोसायड्स, टेनिस तथा फीनोलिक यौगिक पाये जाते है। इसकी जड़ की काष्ठ में एसीटोसाइड नामक ग्लूकोसाइड पायाजाता है।

औषधीय उपयोग :

अग्निमंथ की जड़ें, कड़वी, कटु तापवर्धक विरेचक, विषनाशक, स्तम्भक, हृदय शक्तिवर्धक, वातानुलोमक, पाचक, क्षुधावर्धक, बलकारक तथा एन्टीऑक्सीडेन्ट होती है। इसकी छाल में मलेरियारोधी तथा सूजनरोधी गुण पाये जाते हैं। इसकी काष्ठ गठियारोधी होती है। इनके अलावा इस पौधे में मोटापा कम करने, कोलस्टोरोल कम करने, परजीवीरोधी वर्णरोधी जठरांत्ररक्षक, हृदय उत्तेजक, हृदय रक्षक, शामक, यकृत रक्षक, रक्त शर्करा कम करने वाले, प्रतिरक्षा तंत्र अनुलोमक, आयुवर्धक, मस्तिष्क रक्षक, ज्वरनाशक, कब्जनाशक तथा मूत्रवर्धक गुण पाये जाते हैं।

अग्निमंथ का उपयोग विभिन्न प्रकार के अरिष्ट, अवलेह क्वाथ, घृत, तथा तेल बनाने में किया जाता है। अग्निमंथ का उपयोग विभिन्न फुफ्फुस, हृदय, रक्त, त्वचा तथा गुर्दे के रोगो की औषधियों को बनाने में भी किया जाता है। इसकी जड़ों का उपयोग रक्ताल्पता, ज्वर, सूजन, खांसी, दमा, ब्रोन्काइटिस, कुष्ठ रोग, त्वचा रोगों, अपच, मधुमेह,यकृत रोगों,दुर्बलता तथा मस्तिष्क रोगों के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियों का उपयोग जुकाम, सर्दी, बुखार, योनि में जलन, बवासीर तथा ट्यूमर के उपचार, यकृत विकारो, जीर्ण ज्वर, उदरशूल, पेट फूलना पित्ती, खसरा लसीका पर्वशोथ, त्वचा पर बैक्टीरिया संक्रमण, सिरदर्द तथा मलेरिया के उपचार में भी किया जाता है।

इसके तने की छाल की राख का उपयोग जलोदर के उपचार में किया जाता है। इसकी काष्ठ का उपयोग जोड़ोंकी सूजन व दर्द के उपचार में होता है। इसके फूलो का उपयोग गठिया, नसों के दर्द, सर्दी तथा बुखार के उपचार में होता है। इसके पंचाग का काढ़ा पीने से गठिया तथा नसों के दर्द में राहत मिलती है। इसकी पत्तियों को पका कर तथा पके फलों व बीजों को खाया भी जाता है। इसकी पत्तियों को पानी में उबाल कर उस पानी से नवजात शिशुओं को स्नान कराया जाता है। पत्तियों तथा जड़ों को नारियल तेल को सुगंधित बनाने में उपयोग किया जाता है। इसकी जड़ो से एक रंजक (कलर) भी प्राप्त होता है। इसकी लकड़ी का उपयोग विभिन्न उपकरणों, चाकू के दस्ते, चप्पू इत्यादि बनाने में होता है।

Plant

Roots

Leaf

Inflorescence

Flower

Fruit

वितरण

अग्निमंथ भारतीय उप महाद्वीप, दक्षिण–पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया एवं दक्षिणी प्रशान्त महासागर के द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिणी चीन में पाया जाता है। भारत में यह मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा गुजरात के तटीय क्षेत्रो, उत्तरी कर्नाटक, असम, मेघालय की खासी पहाड़ियों, उत्तरी बंगाल, ओडिशा में महानदी के डेल्टा क्षेत्र छत्तीसगढ़ तथा झारखण्ड राज्यों में पाया जाता है।

आकारिकी

इसमें शाखायें लम्बी, काष्ठीय तथा नीचे झुकी हुई होती है। इसकी पत्तियाँ सरल, विपरीत क्रम में, पतली, दीर्घवृत्तीय, लम्बाकार होती है। पत्तियाँ 2.5 से 9.0 सेमी लम्बी एवं 20 से 7.2 से.मी. चौड़ी होती है। पत्तियाँ किनारे पर नुकीली होती है। इनकी उपरी सतह चिकनी परन्तु निचली सतह थोड़ी रोयेदार होती है। अग्निमंथ में अप्रैल से जून के समय पुष्पन होता है। फूल छोटे, द्विलिंगी, हरे श्वेत रंग के होते हैं। ये पुष्प बड़ी संख्या में तितलियों तथा मधुमक्खियों को आकर्षित करते हैं। इस पौधे में फलन अगस्त सितम्बर माह में होता है। फल गोल, बैंगनी काले रंग के, चारखण्ड वाले होते है। बीज लम्बाकार होते है। इसकी जड़े पीले–भूरे रंग की, काष्ठीय, शाखीय, बेलनाकार तथा थोड़ी सुगंधित होती हैं। जड़ों के ऊपर के छिलके आसानी से निकल जाते हैं। जड़ों की सतह चिकनी एवं रोयेदार होती है। इसकी लकड़ी हल्के भूरे रंग की, कठोर,टिकाऊ होती है।

जलवायु तथा मृदा

अग्निमंथ के लिए उष्ण तथा आर्द्र जलवायु एवं कार्बनिक पदार्थ युक्त रेतीली दोमट मिट्टी उपयुक्त है।

कृषि तकनीक

प्रवर्धन सामग्री

प्रवर्धन सामग्री के रूप में कम से कम एक वर्ष पुरानी कलमें प्रयोग की जाती है। ये कलमें (कटिंग्स) परिपक्व वृक्षों से फरवरी–मार्च में प्राप्त की जाती है।

पौधशाला (नर्सरी) तकनीक

कलम लगाने के लिए थैलियों में रेत, मिट्टी तथा गोबर खाद का मिश्रण भरा जाता है। कलम रूट हार्मोन से उपचारित कर थैलियों में लगाते है। शेड हाउस